अनुक्रमांक .....

२०२३-२०२४

पूर्वमध्यमा प्रवेश परीक्षा

विषय - हिन्दी, पत्र -द्वितीय

समयः ३ घण्टे **सम्पूर्णाङ्क –१००**

व्याकरण- खण्ड

प्रश्न - १.

क. भाषा की परिभाषा देते हुए हिन्दी भाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। ४

ख. देवनागरी लिपि की विशेषताएं बताइए। ४

प्रश्न – २.

क. व्यंजन किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखिए। २

ख. अल्पप्राण किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए। २

ग. सघोष से क्या अभिप्राय है? सोदाहण स्पष्ट कीजिए। २

प्रश्न – ३.

क. वर्तनी को स्पष्ट करते हुए भाषा में इसका महत्त्व बताइए। ३

ख. निम्नलिखित शब्दोंमें से किन्ही चार को शुद्ध करके लिखिए- ४

आधीन, उपरोक्त, पुज्य, आशिर्वाद, उज्वल, विरहणी

ग. निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान विराम-चिन्हों का प्रयोग कीजिए- ३

पुराणों में देखा गया है कि तप देवता करते हैं और राक्षस भी जिस किसी को कुछ भी सिद्धि प्राप्त करनी है तप किए बिना कोई चारा नहीं इसमें उसकी नीयत अगर सात्विक रही तो उसका और दुनिया का भला होता है अगर उसकी नीयत बुरी रही तो वह सारी दुनिया का नाश भी कर सकता है मनुष्य ने एटम बम हाइड्रोजन बम जैसे अस्त्र तैयार किये यह सब मनुष्य की तपस्या का ही फल है

प्रश्न – ४.

क. कोष्ठकों में दिए गये संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषणों से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- ५

i. मोहन की माँ ..... है। (अच्छा, अच्छी)

ii. ..... आपके दर्शन करने आया हूँ। (तुम, मैं)

iii. ..... नदी बहती है। (बर्फीला, बर्फीली)

iv. तुम बहुत ..... हो, कल तुम्हारी शिकायत अवश्य करुँगा। (अच्छे, शरारती)

v. .....संवाददाता ने यह सूचना दी है। (हम, हमारे, आप)

ख. सर्वनाम की परिभाषा लिखिए और सोदाहरण उसके भेदों पर प्रकाश डालिए। ३

ग. विशेषण से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित समझाइए। ३

घ. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए- २

अग्नि, चन्द्रमा, पर्वत, जल, गंगा।

ङ. निम्नलिखित वाक्यांशों में से किन्हीं तीन के लिए एक शब्द लिखिए- ३

जिसे ईश्वर में विश्वास नहीं है, जिसका कोई शत्रु न हो, जो बहुत जानता हो,
जो देखने में प्रिय लगता है, जिसकी कल्पना न की जा सके।

प्रश्न – ५.

क. यण संधि किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए। ३

ख. निम्नलिखित में से किन्हीं दो में संधि कीजिए- २

सूर्य+उदय, विद्या+आलय, सत्+आचार, वाक्+ईश, निः+चल।

ग. अव्ययीभाव समास को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। ३

घ. निम्नलिखित में से किन्ही दो समस्त पदों में सविग्रह समास बताइए-

आजन्म, शिवपार्वती, चौराहा, महात्मा। २

ङ. उपसर्ग से क्या समझते हैं? नीचे लिखे उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए- ३

आ, नि, अभि, उप।

च. प्रत्यय किसे कहते हैं? नीचे दिये गए प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए। ३

अक, इया, सा, अन।

प्रश्न – ६.

क. शब्द और पद के अन्तर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। ३

ख. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए- ५

i. मैनें आज वाराणसी जाना है।

ii. वह घोड़े में सवार था।

iii. मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।

iv. हमारे अध्यापक प्रश्न पूछते हैं।

v. श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं।

ग. संयुक्त वाक्य को उदाहरण देकर समझाइए। २

घ. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए- ५

आस्तीन का साँप, नाक में दम करना, ईद का चाँद होना, अंधे की लकड़ी, श्री गणेश करना।

रचना – खण्ड

प्रश्न – ७.

क. निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखकर इसका उचित शीर्षक बताइए- ५

समाज की सेवा अपनी सेवा है। हम समाज से अलग नहीं। समाज को स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य है। संगति का प्रभाव मनुष्य पर ज्यादा पड़ता है। बुरे आदमियों की संगति में हम अच्छे रह नहीं सकते। जब परिवार के सभी आदमी दु:ख से कराहते हों, हम हँस नहीं सकते। समाज के साथ तो हमें आमरण रहना है। अगर हमें अपने आपको सुखी और स्वच्छ रखना है, तो अपने परिवार को, अपने पड़ोस को सुखी और स्वच्छ रखना पड़ेगा। परिवार और पड़ोस समाज के ही अंग हैं। कुछ लोगों की यह शिकायत है कि समय की कमी के कारण वे समाज की सेवा करने में असमर्थ हैं। यह शिकायत निराधार है।

ख. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए- ५

जातियाँ इस देश में अनेक आई हैं। लड़ती-झगड़ती भी रही हैं, फिर प्रेमपूर्वक बस भी गई हैं। सभ्यता ही नाना सीढ़ियों पर खड़ी और नाना ओर मुख करके चलने वाली इन जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकालना कोई सहज बात नहीं थी। भारतवर्ष के ऋषियों ने अनेक प्रकार से अनेक ओर से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। पर एक बात उन्होंने लक्ष्य की थी। समस्त वर्णों और समस्त जातियों का एक सामान्य आदर्श भी है। वह है अपने ही बन्धनों से अपने को बाँधना। मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है ? आहार, निद्रा आदि पशु सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य प्राणियों के, लेकिन फिर भी पशु से भिन्न है। उसमें संयम है, दूसरों के सुख-दु:ख के प्रति संवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। यह मनुष्य के स्वयं उद्भावित बन्धन हैं। इसलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है।

यह किसी खास जाति का वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। वह मनुष्य मात्र का धर्म है। गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि यह सब के दु:ख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्मनिर्मित बन्धन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उक्त यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजाने में भी हमारी भाषा से यह भाव कैसे रह गया है। लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान मनुष्य को सर्वत्र पछाड़ता है और आदमी है कि सदा उससे लोहा लेने को कमर कसे है।

i. अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का उक्त क्या है ?

ii. देश में आने वाली विभिन्न जातियों ने क्या खोज निकला था ?

iii. किन्होंने यह खोजा कि सभी जातियों का एक सामान्य आदर्श है ?

iv. मनुष्य को मनुष्य कौन बनाता है ?

v. मनुष्य को सर्वत्र कौन पछाड़ता है?

ग. निम्ननिखित सूक्त वाक्यों में से किन्ही दो का भाव-पल्लन कीजिए- ५

i. वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।

ii. क्रोध एक तरह का रोग होता है, जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं।

iii. नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है।

iv. असफलता ही सफलता का आधार है।

प्रश्न – ८. अपने शहर में बढ़ती हुई अपराध वृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। ७

अथवा

अपने पिता को एक पत्र लिखिए, जिसमें अपने विद्यालय के वार्षिक पुरस्कार वितरण का वर्णन करें।

प्रश्न – ९. किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए- ७

i. मेरा विद्यालय

ii. दहेज प्रथा

iii. स्वच्छ भारत अभियान

iv. राष्ट्रभक्ति

v. विज्ञान-वरदान या अभिशाप

****